© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Scienceand Technology

प्राचीन भारत में पर्यावरण बोध

डॉ0 ज़ेबा इस्लाम
प्राचीन इतिहास संस्कृति,
एवं पुरातत्व विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद।

प्रकृति अर्थात् पंचमहाभूतों की सहज एवं साम्यावस्था मनुष्य के द्वारा जब इस साम्यावस्था को विश्रृंखलित एवं विखण्डित करने का प्रयास किया जाता है, तो विक्षोभ उत्पन्न होता है और परिणाम होता है, इन पंचमहाभूतों से निर्मित मनुष्य पशु–पक्षी तथा स्थावर उपादानों का विनाश। मनुष्य वर्तमान समय में इस धरा का सर्वाधिक हिंसक, क्रूर एवं शोषक प्राणी के रूप में परिवर्तित होता जा रहा है। उसकी भोग लिप्सा अपरिहार्य विभीषिका को सवंर्धित कर रही है। प्राचीन मनीषियों ने प्रकृति को माता की संज्ञा प्रदान की थी और इसके अनावश्यक दोहन के प्रति चैतन्य एवं अनथक विरमण की व्यवस्था कर दी थी।

ईशोपनिषद[1] का प्रारम्भ ही इस उद्घोष से होता है –

ईशावास्यमिदं सर्वत्र् यत्किञ्चित् जंगत्यांजगत

तेन व्यक्तेन भुञजीथाः मा गृधः कस्यास्विृद्धनम।।

श्रृग्वेद[2] के विश्वदेवा सूक्त से जो प्रार्थनायें प्राप्त होती हैं, वे अतीत, वर्तमान एवं अनागत सभी अवधि में सर्वत्र एवं सर्वप्राणि हिताय उपादेय एवं आचरणीय है। इस सूक्त के मन्त्रों में पंचमहाभूतों की प्रार्थना के साथ–साथ सभी दिशाओं में विर्कीण सरबुद्धि के ग्रहण करने का संदर्भ प्राप्त होता है। सभी के कल्याण की कामना पदे–पदे प्राप्त होती है।

वर्तमान समय की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि मनुष्य जड़ एवं स्थावर पदार्थों के शोषण के माध्यम से सामाजिक विकास के छद्म आवरण में अपनी कृत्सिप्त एवं स्वार्थ लिप्सा की पूर्ति करना चाहता है और कर भी रहा है। मनुष्य स्वंय में चैतन्य है, इसे वह भूल चुका है। प्रस्तुत लेख में पंचमहाभूतों के प्रति आर्श दृष्टिकोण, समाष्टि कल्याण एवं पंचमहाभूतों को नष्ट करने के प्रति प्रायश्चित एवं दण्ड के रूप में प्रतिपादित किये गये नियमों एवं निर्देशों की प्रासंगिक एवं समाज संदर्भी विवेचना का अभिमत प्रयास किया गया ही साथ ही साथ पर्यावरण प्रदूषण की वर्तमान स्थिति में इन सन्दर्भों की क्या उपयोगिता है इसको भी विश्लेषित करने की चेष्टा की गयी है।

संस्कृत साहित्य और प्रकृति वर्णन एक–दूसरे के परिपूरक हैं। सभी रचनाओं में पर्यावरण से सम्बन्धित प्रकृति–चित्रण को एक अन्यतम् स्थान दिया गया है। संस्कृत साहित्य में प्रकृति और प्राणी का शाश्वत् सम्बन्ध

बताया गया है। इसका मुख्य उदाहरण है, विश्व की सबसे प्राचीन पुस्तक श्रृग्वेद जिसमें प्राकृतिक तत्वों को मूर्त रूप देकर विविध विषयों का वर्णन है, जो वैदिक काल में भी लोगों की आस्था के रूप प्रकृति प्रेम को दर्शाता है।

प्रकृति ही पर्यावरण है, जब प्रकृति विनष्ट होती है, तब अनेक विकृतियों के साथ प्राणी का भी विनाश होता है। पर्यावरण शब्द दो शब्दों के मेल परि+आवरण से बना है अर्थात् हमारे चारों ओर प्राकृतिक तत्वों का जो आवरण है, वहीं पर्यावरण कहलाता है। जैसे– वायु, जल, अग्नि, आकाश, चन्द्रमा, पृथ्वी, वनस्पति, नदी, पर्वत, पशु, पक्षी इत्यादि, और यहीं आवरण हम सभी जीवों के जीवन का आधार भी है। यजुर्वेद[3] (36/17) में पर्यावरणीय घटकों की स्तुति भी की गयी जो मनुष्यों द्वारा प्रकृति के समक्ष आभार प्रस्तुत करती है।

शास्त्रों के अनुसार सृष्टि पाँच महाभूतों के समूह से उत्पन्न मानी गयी है। ये तत्व हैं – पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, और वायु। जो कि पर्यावरण के भी अति महत्वपूर्ण तत्व है। इन पाँच महाभूतों में से यदि किसी एक में भी किसी प्रकार की विकृति होती है, तो पर्यावरण का ह्रास स्वतः ही होने लगता है। पर्यावरण में इन पाँच तत्वों का सम्यक् सन्तुलन बहुत ही आवश्यक है। क्योंकि सृष्टि निर्माण ही इनके द्वारा हुआ है, इन पाँच तत्वों में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है, एक में विकृति आने पर अन्य स्वतः ही प्रभावित होने लगता है।

यहां सबसे पहले संस्कृत साहित्य में पृथ्वी तत्व का पर्यावरण के सम्बन्ध में चिन्तन करें तो पुराणों[4] में पृथ्वी को स्वच्छ, सुन्दर, विमल, निर्मल कहा गया है। यहां पृथ्वी को देवी के रूप में प्रकाशित किया गया है और कहा गया है कि, सभी जीवों के जीवन का आधार पृथ्वी ही है, एक पृथ्वी ही है जो बोये हुए एक बीज को अनेक की मात्रा प्रदान करती है। 18 महापुराणों में से एक वामन पुराण[3] में भी भूमि अर्थात् पृथ्वी को स्वच्छ बनाये रखने के लिए स्वच्छ स्थान पर मलमूत्र आदि का त्याग वर्जित कहा गया है, किन्तु आज सभ्य माने जाने वाले समय में भी अविसर्जित पदार्थों के द्वारा अनेक प्रकार से भूमि व भूमिगत प्रदूषण बढ़ रहा है। जबकि हजारो वर्षों पूर्व रचे गये वेद पुराणों में पृथ्वी को देवी रूप में सम्मान दिया गया है तथा मानव और भूमि पुत्र व माता का सम्बन्ध बताया गया है। अथर्ववेद[5] में मन्त्रों द्वारा कहा गया है यथा –

"नमो मातरै पृथित्यै, माता भूमि पुत्रोंऽहम् पृथित्याः पादस्पर्ष क्षमस्व में।"

(अथर्ववेद 12/1/12)

दूसरा तत्व 'जल' पृथ्वी पर शक्तिवर्धक और सभी जीवों का प्राण है, इस जल तत्व की सहायता से ही पृथ्वी वृक्ष–लता–वनस्पति आदि का पोषण करती है। जल की मुख्य स्रोत पृथ्वी पर बहने वाली नदियों को भी देवी रूप में वर्णित किया गया है। आज जल का अति–दोहन और प्रदूषण हो रहा है। वामन पुराण[6] के अनुसार जो मानव जल को प्रदूषित करे उसे दुर्गन्ध युक्त तालाब में डाल दिया जाय ऐसा विधान है। पुराणों में रूद्रदेव को सशरीर रूप जल ही कहा गया है।

तीसरा तत्व अग्नि– जो तेज प्रकाश ऊर्जा के रूप में सर्वत्र विद्यमान है। अग्नि देव अपने सूर्य स्वरूप के द्वारा समस्त सृष्टि का पोषण करते हैं। प्राणियों के शरीर में अवस्थित जठराग्नि उनके द्वारा खाये हुए

भोजन को पचाती है। अग्निरूपी सूर्य जल के वाष्पीकरण से बादलों की सहायता से वर्षा करते हैं। प्राचीन शास्त्रों में यज्ञ का विधान भी वर्णित है, जो वर्षा होने और स्वच्छ वातावरण के लिए सहायक कहा गया है।

संस्कृत साहित्य में सृष्टि या पर्यावरण के पाँच तत्वों में से एक आकाश तत्व का भी महत्वपूर्ण स्थान बताया है, पुराण[7] साहित्य में आकाश को भी महादेव का एक अन्य रूप माना है।

पांचवा तत्व है वायु। वायु यह हमारे शरीर में अमूर्त रूप से विचरण करती है और पर्यावरण का महत्वपूर्ण घटक भी है। संस्कृत शास्त्रीय ग्रन्थों में वायु का गुण 'गन्ध' कहा गया है, वाल्मीकि रामायण में भी स्वच्छ वायु का महत्व और पर्यावरण में इसकी अनिवार्यता बतायी गयी है। वायु पुराण[8] में भी वायु अर्थात् 'पवनदेव' का पूजन और उनकी महिमा बतायी गयी है।

पर्यावरण संरक्षण में हमारे चारों ओर रहने वाले अन्य जीवों का भी विशेष योगदान है, जोकि वैज्ञानिक रूप में भी सिद्ध हो चुका है। मानव–प्रकृति तथा अन्य जीव–जन्तु परस्पर एक–दूसरे के पूरक है। अतः पौराणिक शास्त्रों में पशुओं को भी देवरूप में स्वीकार किया गया है, जैसे– गाय को 'गौ' माता और अनेक देवी–देवताओं के साथ उनका चित्रण भी मिलता है। पशुओं एवं पक्षियों की हत्या करना भी दण्डनीय बताया गया है, संस्कृत साहित्य में अहिंसा को सर्वश्रेश्ठ स्थान दिया गया है।

इस प्रकार पर्यावरण के घटकों के विषय में उनके संरक्षण हेतु उन्हें दैविक रूप प्रदान कर साहित्य में विशेष रूप से चिन्तन किया गया है। पर्यावरण के प्रत्येक तत्व को देव आदि रूप में सम्मान देकर इन प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग मानव को आभार के भाव से करना चाहिए न कि अधिकार भाव से। ऐसी शिक्षा संस्कृत साहित्य में जन–मानस को दी गई, इससे हम प्राकृतिक संसाधनों की अति दोहन की समस्या से भी बच सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. ईशोपनिषद,
2. वही
3. ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, और अर्थववेद
4. पुराण–वामान, वराह, अग्नि, स्कंद, गरूड़, पदम,
5. ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अर्थववेद
6. वामन पुराण
7. महाकाव्य– रामायण, महाभारत
8. पतंजलि का महाभाष्य, महाभारत
9. वात्स्यायन का कामसूत्र
10. चरक संहिता – सुश्रुत संहिता, अव्यंग हृदय
11. विद्शाल भंजिका
12. भवभूति उत्तरामचरित, अर्थववेद